Dr. M. Sharma
Journal - Article

Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

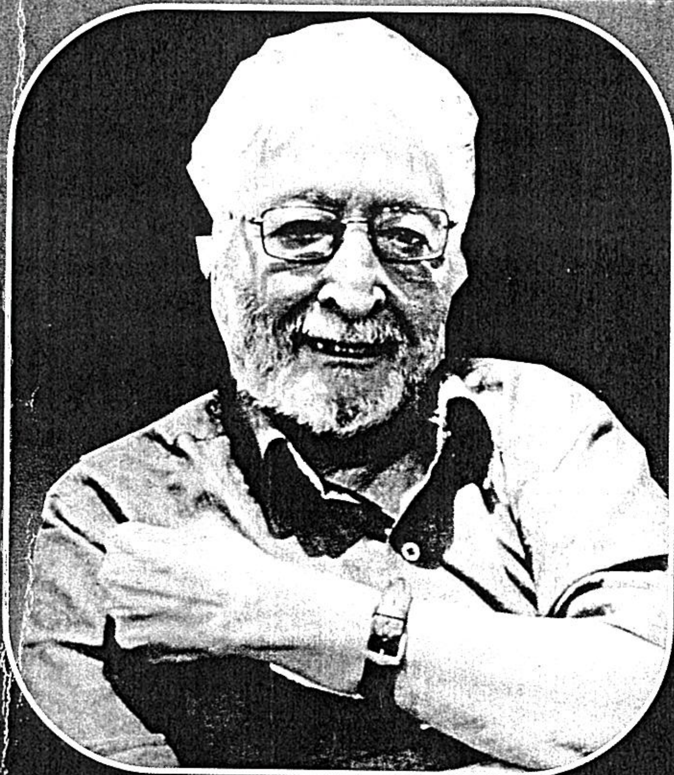

देवेश ठाकुर

जीवन के ९०वें वसंत में प्रवेश करने पर समीचीन परिवार की ओर से अनंत शुभकामनाएँ 31

● वर्ष-15 ● अंक 31 ● अप्रैल - जून 2022 ● पूर्णांक 69 ● मूल्य 100 रुपए

● प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर ● संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

देवेश ठाकुर

रचना-यात्रा के सात दशक

जन्म : 23 जुलाई, 1933, नानी के गाँव पैठानी (अल्मोड़ा, उत्तरांचल) में

रचना संसार

उपन्यास : भ्रमभंग, प्रिय शबनम, काँचघर, इसीलिए, अपनाअपना अकाश, जनगाथा, गुरुकुल, शून्य से शिखर तक, अंततः, शिखर पुरुष, जंगल के जुगनू, कातर बेला, जीवा, देवता के गुनाह, संध्या छाया, स्वप्न दंश, व्यक्तिगत, मारिया, कैम्पस कथा, स्मृतियों के कोलाज,

शीघ्र प्रकाश्य : तीसरी लड़ाई, ऐसा भी होता है, अपने अपने अंतर्द्वंद्व

काव्य : मयूरिका, अंतरछ्या, अवकाश के क्षणों में, कविताएँ (संपूर्ण कविताएँ)

कहानी : सिर्फ संवाद, फैसला तथा अन्य कहानियाँ

समीक्षा : नयी कविता के सात अध्याय, नदी के द्वीप की रचना प्रक्रिया, मैला आँचल की रचना प्रक्रिया, हिन्दी कहनी का विकास, साहित्य की सामाजिक भूमिका, साहित्य के मूल्य, आलेख

शोध : प्रसाद के नारीचरित्र (पीएच. डी.), आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ, हिन्दी साहित्य तथा साहित्येतिहास : अंतरानुशासनों का अनुशीलन (विश्वविद्यालय अनुदान अयोग की विशिष्ट परियोजना के अंतर्गत)

संपादन : कथाक्रम1, कथाक्रम2 (कुल 175 कहानियाँ), कथावर्ष1976, कथावर्षझ1977, कथावर्ष1978, कथावर्ष1979, कथावर्ष1980, कथावर्ष1981, कथावर्ष1982, कथावर्ष-1983, कथावर्ष1992, कथावर्ष1994, हिन्दी की पहली कहानी, रचना प्रक्रिया और रचनाकार, प्रेमचंद साहित्य के अध्येता : डॉ. कमल किशोर गोयनका किशोर साहित्यः दो सहेलियाँ (कहानी संग्रह), ममता (उपन्यास)

समाज और राजनीति : आजादी की आधी सदी और आम आदमी (तीन खंडों में)

जीवनी : वुद्धगाथा

आत्मकथा : मैं यों जिया (आरंभिक अंर्तयात्रा, चंदन वन के बीच, इस यात्रा में) (तीन खंडों में) इसके अतिक्त 6 लोकप्रिय अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद। 1500 से अधिक लेखों, शोधपत्रों, कहानियों, कविताओं, पुस्तक समीक्षाओं और स्तम्भ लेखों का प्रकाशन।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

देवेश ठाकुर रचनावली

(16 खंडों में)

(द्वितीय संस्करण)

संपादक :

डॉ. सतीश पांडेय, डॉ. बी. सत्यना-

मूल्य : 16,500/-

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली - 110002

प्राचार्य यादव जी को सादर।
सतीश पांडेय
25/8/2022

ISSN-2250-2335 Reg. No. MAHHIN/2008/26222

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)
पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी,
असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.
टेलिफोन : 25161446
Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)
1) प्रोफेसर ताकेशी फुजिई
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
टोक्यो यूनिवर्सिटी फॉर फॉरेन स्टडीज, टोक्यो
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
वाराणसी (उ. प्र.)
4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रो. हिंदी, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी,
दिल्ली110068
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
6) डॉ. अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई
विश्वविद्यालय, मुंबई
7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
सवित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे
8) प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

• वर्ष-15 • अंक 31 • अप्रैल-जून-2022 • पूर्णांक 69 • मूल्य 100 रुपए
सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-
सीधे समीचीन के खाते में भेजने के लिए : खातेधारक का नाम : **समीचीन** / sameecheen
A/C No. 60330431138, Bank of Maharashtra,
Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai. IFSC : MAHB0000045

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

अनुक्रमणिका

अपने तई

1. जंगल के जुगनू : नारी-संकल्प एवं संघर्ष का आख्यान - डॉ. प्रविणचंद्र बिष्ट 05-1
2. गोडसे@गांधी.कॉम : संवादहीनता बनाम संवाद - डॉ. सदानंद भोसले, प्रा. प्रदीप रंगराव जटाल 11-1
3. आदिवासी अस्मिता का पक्षधर कवि-अनुज लुगुन - डॉ. आरिफ शौकत महात 16-2
4. उनकी खामोशी अब भी बहुत कुछ कह रही है.. -डॉ. महेश दवंगे 22-27
5. अज्ञेय का सृजनात्मक चिन्तन-डॉ. राजन तनवर 28-32
6. 'बिखरे पन्ने' का आत्मनिरपेक्ष आत्म- डॉ. मीना सुतवणी 33-38
7. अब्बास किरोस्तामी की सिनेमाई प्रयोगधर्मिता का समीक्षात्मक अध्ययन- डॉ. ईशान त्रिपाठी 39-44
8. अमूर्त्त में मूर्त्त की सत्यताः भारत दुर्दशा- डॉ. पूनम शर्मा 45-50
9. गोरखनाथ के काव्य की भाषिक संरचना-डॉ. दिनेश साहू 51-57
10. मीरा : नारी का संघर्ष- डॉ. सीमा रानी 58-63
11. गुप्त जी के काव्य में व्याप्त पर्यावरण संरक्षण-डॉ. मिथिलेश शर्मा 64-70
12. रामानंद रामरस माते, कहहि कबीर हम कहि कहि थाके... -डॉ. अशोक कुमार मीना 71-75
13. रसानुभूति और महेश दिवाकर का काव्य-डॉ. सुनील कुमार 76-81
14. भविष्य की उम्मीद को टटोलती समकालीन कविता -डॉ. शशि शर्मा 82-87
15. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की 'बस एक ही इच्छा' में चित्रित स्त्री संवेदना-डॉ. पठान रहीम खान 88-93
16. 'नत्थी टूट गयी थी' कहानी में चित्रित वेश्या जीवन -डॉ.जाकिर हुसैन गुलगुंदी 94-98
17. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में ग्लोबल संस्कृति -डॉ. ललित श्रीमाली 99-103
18. बद्री सिंह भाटिया के कहानी संग्रह 'कवच' में राजनीतिक सन्दर्भ-डॉ. अंजू बाला 104-108
19. 'झूमुर' गीतों में प्रेम-प्रियंका दास 109-114
20. आजादी के बाद मानवीय संवेदना का बिखरता मूल्य एवं स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास-रविकान्त राय 115-119

स्वातंत्र्योत्तर समीक्षा के नवीन प्रतिमान-लवली रानी 120-123
हिंदी ग़ज़ल में युगीन यथार्थ- प्रो. सुधाकर शेंडगे 124-130
'लौटना नहीं है' में स्त्री-जीवन - नैन सिंह, डॉ. अरविंद कुमार यादव 131-136
भक्तिकाल और आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना - सपना तिवारी 137-143
नरेंद्र मोहन के नाटकों में राजनीतिक व्यवस्था-सरिता यादव 144-148
वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति- पीयूष कुमार, प्रो. रसाल सिंह 149-154
राष्ट्रीय चेतना के नियामक कवि गोरेलाल-डॉ. आशुतोष शर्मा 155-160
यशपाल कृत 'मेरी जेल डायरी' की प्रासंगिकता-पंचराज यादव 161-166
सामाजिक उन्नयन संबंधी जीवन-मूल्य और सुदर्शन की कहानियाँ-संजय यादव 167-170
आसन्न मृत्यु और निरापद सेल्मा -प्रतिमा भारतीया 171-176
स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिकः प्रेमचंद-डॉ. शीतांशु 177-181
आदिवासियों के मानवाधिकारों एंव संवैधानिक अधिकारों की विवेचना-डॉ. सुधीर कुमार चतुर्वेदी, मनोज यादव 182-190
उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी के बदलते जीवन-मूल्य-पिंकी खटनाल 191-196
'असंभव का संधान : 'मुझे चाँद चाहिए' के सन्दर्भ में -अर्पणा कुमारी 197-202
आदिवासियों का संघर्षमय जीवन-प्रियंका देऊ वेलीप 203-205
राकेश कुमार सिंह के कहानी संग्रह 'रूपनगर की रूपकथा' का आलोचनात्मक अध्ययन-सुशील कुमार 206-211
अनुवाद एवं अनुवाद चिंतन की परंपरा - डॉ. बालासाहेब सोनवने 212-214
महात्मा ज्योति राव फुले- डॉ. स्मृति चौधरी 215-218
शास्त्री नित्य गोपाल कटारे की 'देख प्रकृति की ओर' तथा 'जल ही जीवन है' का वनस्पति शास्त्रीय अनुशीलन-प्रा. आलोक गुडे, डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय 219-223
उदय प्रकाश की कहानियों में भूमंडलीकरण एवं भारतीय संस्कृतिः एक अनुशीलन-इति सिंह 224-230

Certified as TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

गुप्त जी के काव्य में व्याप्त पर्यावरण संरक्षण

डॉ. मिथिलेश शर्मा

हिन्दी काव्य जगत् में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी का आविर्भाव उस समय हुआ था जब देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अहिंसात्मक नेतृत्व में पराधीनता के विरुद्ध स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहा था। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, जैसे अराजनैतिक संगठन, सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण का बिगुल बजा रहे थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी खड़ी बोली के विकास में भरसक योगदान प्रदान कर रहें थे। उसी समय गुप्त जी अपनी अलौकिक काव्य प्रतिभा के कारण सहज ही देश की तत्कालीन गतिविधियों में अपनी सक्रियता निभा रहे थे। गुप्त जी सच्चे अर्थों में शुद्ध चेतना और जन जागृति के कवि हैं। सांस्कृतिक संवेदना उनके काव्य की अपनी अद्भुत पहचान है। उन्होंने अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति में काव्य की संवेदना के स्तर पर सर्वसुलभ, सर्वहिताय, सामंजस्य स्थापित किया है।

आज पर्यावरण संरक्षण का प्रश्न समस्त विश्व के सामने मुँह बाये खड़ा है। कारण कि हमारी चेतना के इर्द-गिर्द जो वातावरण है, भूमि, जल, अग्नि, वायु आकाश आदि का जो परिवेश है, वह दूषित होता जा रहा है। परिणाम स्वरूप प्रदूषण का प्राणघाती, सर्वभक्षी एक नया संकट उत्पन्न हो गया है। इस संकट का मूल कारण हमारी स्वार्थ वृत्ति है। हमने प्रकृति का विवेक पूर्वक सदुपयोग न कर अपनी अनंत विषय कामनाओं और अतृप्त काम भोगों की तृप्ति के लिए उसका शोषण शुरू कर दिया है।

मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस भयावह स्थिति को गहराई से सभझा और अपने काव्य में इसे अभिव्यक्ति प्रदान की। यह सच है कि गुप्त जी का काव्य मूलतः प्रकृतिपरक काव्य नहीं है किन्तु वे प्रकृति को मानवीय संवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में ही चित्रित करते हैं। पर जहाँ भी वे भूमि, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, आकाश आदि भौतिक तत्वों का चित्रण करते हैं, वहाँ वे इनकी सुंदरता पर मुग्ध होते हैं, इनके सर्वजन हितकारी उपयोग पर बल देते हैं। भूमि सदा से पवित्र मानी जाती रही है, वह हमारी माँ है और हम सब उसके पुत्र हैं। अपनी उर्वर शक्ति से वह हम सबका पालन-पोषण करती है। गुप्त जी ने इसी भूमि की भारत माता के रूप में वंदना की है और वे इसके प्राकृतिक सौंदर्य पर मुग्ध रहे हैं। मातृभूमि कविता में गुप्त जी कहते हैं-

'नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है। / सूर्य चंद्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं। / बंदीजन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन है॥
करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की' ॥[2]

भारतवर्ष को समस्त सृष्टि का गौरव कहकर उसकी महिमा से अभिभूत होते हुए गुप्त जी भारत की श्रेष्ठता कविता में भारत को श्रेष्ठतम बतलाते हुए उसके अनुपम सौन्दर्य से

Certified as
TRUE COPY
Principal
...n Jhunjhunwala College,
... (W), Mumbai-400086.

प्रभावित होते हुए कहते हैं -

'भू लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीलास्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है।
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥'[3]

पंचवटी (खंडकाव्य) में उन्होंने प्रकृति को मानवीय रूप में चित्रित किया है। गुप्त जी प्रकृति की प्रातः व सायंकालीन लीला को सुख-शांति और विश्राम की क्रीड़ा-स्थली मानते हैं। विविध चेष्टाएँ करती हुई प्रकृति रात्रि में सबके सो जाने पर सम्पूर्ण पृथ्वी पर ओस की बूँद रूपी मोती बिखेर देती है और भोर की बेला में सूर्य की रश्मियाँ उन मोतियों को बटोर लेती हैं। साथ ही, सूर्य पुनः इन मोतियों को आरामदायिनी संध्या की झोली में भर देता है, जो अपने केशों में तारों के रूप में गूँथ लेती है। इस दृश्य को कवि ने पृथ्वी, किरण और संध्या तीनों का मानवीकरण करते हुए, सुंदर शब्दों में वर्णित किया है -

'है बिखेर देती वसुंधरा, मोती, सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको, सदा सवेरा होने पर।
और विराम दायिनी अपनी, संध्या को दे जाता है।
शून्य-श्याम तनु जिससे उसका, नया रूप झलकता है॥'[4]

भूमि की तरह जल भी जीवन को शुद्ध और मधुर बनाता है। जल जीवन का परम आनंद है, जो प्रेम और करुणा की तरलता से जीवनरूपी बगीचे को सींचकर सहज और सरल बना देता है। साकेत की उर्मिला अपने दुःख से सबको दुःखी नहीं करती। वह बादल और नदियों को भी आहत नहीं करती बल्कि अपने जल तत्व को सब में वितरित करती हुई, हर्षित होती हुई कहती है-

'बरस घटा बरस मैं संग, सरसै अवनी के सब अंग॥
मिले मुझे भी कभी उमंग, सबके साथ सयानी,
मेरी ही पृथ्वी का पानी॥'[5]

इसी प्रकार गुप्त जी की उर्मिला गंगा की तरंगों के साथ आनंदोल्लास का अनुभव करते हुए आनंद से झूम उठती है और कहती है कि-

'जय गंगे, आनंद तरंगे, कलरवे, / अमल अंचले, पुण्य जले, दिव संभवे!
सरस रहे यह भारत-भूमि तुमसे सदा, / हम सबकी तुम एक चलाचल संपदा' ॥[6]

मानव जीवन को सफल और साकार बनाने में गुप्त जी ने समय-समय पर प्रकृति के अनेक रूपों का सहारा लिया है। साकेत में जिस समय उर्मिला के विरह को दर्शाया है, उस समय शरद ऋतु में दिखाई देने वाले खंजन पक्षी से तुलना की है। उसे देखकर विरहिणी उर्मिला को अपने प्रियतम का आभास होने लगता है। वह सोचती है कि जब उसके प्रियतम ने अपने नेत्र इस ओर फेर लिए हैं तो संभवतः उनके दर्शनों का लाभ अतिशीघ्र ही प्राप्त होगा। यह सोचकर उर्मिला के हृदय में आनंद की लहरें हिलोर भरती

हैं, जिसकी अनुभूति इन पंक्तियों में देखी जा सकती है -

'निरख सखी, ये खंजन आए,
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये!
फैला उनके तन का आतप, मन ने सर सरसाये,

x x x

फूल उठे हैं कमल, अधर-से ये बन्धूक सुहाये!
स्वागत, स्वागत, शरद, भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नभ ने मोती वारे, लो, ये अश्रु अर्घ्य भर लाये' ![7]

साकेत में कवि ने विविध स्थलों पर अनेक पक्षियों के माध्यम से उर्मिला के दुःख की अनुभूति को अभिव्यंजित किया है। जैसे कभी कोयल को सांत्वना देते हुए तो कभी चक्रवाक पक्षी को समझाते हुए, कभी कली को शिक्षा देते हुए तो कभी पुष्प और लताओं को प्रोत्साहन का पाठ पढ़ाते हुए और कहीं-कहीं पर तो शिशिर के समय मक्खी-मकड़ी के प्रति भी कवि ने उर्मिला की संवेदना को दृश्यमान किया है -

'शिशिर, न फिर गिरि-वन में,
जितना माँगे, पतझड़ दूँगी मैं इस निज नंदन में,
कितना कंपन तुझे चाहिए, ले मेरे इस तन में।
सखी कह रही, पांडुरता का क्या अभाव आनन में?

x x x

सखि, न हटा मकड़ी को, आई है वह सहानुभूति-वशा,
जा लगता मैं भी तो, हम दोनों की यहाँ समान-दशा' ।[8]

गुप्त जी का 'साकेत' प्रकृति के तमाम उपमानों से चित्रित एक ऐसी सुंदर रचना है जिसमें उन्होंने प्रकृति और मनुष्य का सामंजस्य स्थापित कर, काव्य-जगत में एक अनोखी प्रेरणा को जन्म दिया है। प्रकृति के सुंदर रूप तो काव्य-जगत में सदैव देखने को मिलते हैं पर मानव का उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर एक रूप होना बहुत ही कम दिखाई देता है जो गुप्त जी के काव्य में है। गुप्त जी ने प्रकृति के समरूप का भी सुंदर वर्णन किया है ताकि मनुष्य में सभी को वितरित करने की भावना का उदय हो। संसार के सभी जनों में खुशहाली तभी आ सकती है जब प्रकृति द्वारा उत्पन्न वस्तुओं का समान बँटवारा हो। आकाश, वृक्ष, नदियाँ सभी पृथ्वी के प्राणियों पर उपकार करते हैं और बदले में कोई इच्छा नहीं रखते। यदि, मनुष्य में भी यह भावना व्याप्त हो जाए तो संसार सुखमय हो जाए। वे कहते हैं -

पर नद को अवकाश कहाँ है इसका? / सोचो, जीवन है श्लाध्य स्वार्थमय किसका?/
करते हैं जब उपकार किसी का हम कुछ, / होता है तब संतोष हमें क्या कम कुछ?/
ऐसा ही नद के लिए मानते हैं हम, / अपना जैसा ही उसे जानते हैं हम। /
जब निष्फल था यदि तृषा न हममें होती, / है वही उगाता अन्न, चुगाता मोती।/

Certified as TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

निज हेतु बरसता नहीं व्योम से पानी, / हम हों समष्टि के लिए व्यष्टि-बलिदानी' ।[9]

अग्नि तत्व शुद्धता व पवित्रता का प्रतीक है। वह अपने संपर्क से समस्त विकारों को जलाकर निर्विकार कर देता है। जिस प्रकारअग्नि में ही वह शक्ति होती है कि सोने को तपाकर शुद्ध बनाती है, उसी प्रकार सम्पूर्ण संसार के विकारों को सूर्य अपनी ऊष्मा से तपाकर नष्ट कर देता है और नैसर्गिक वातावरण को शुद्ध और स्वस्थ बना देता है। अग्नि तत्व तपस्वी है, तपोयोगी भी है। उसके संपर्क से मानव के समस्त विकार मानसिक, भौतिक, आत्मिक नष्ट हो जाते हैं। 'अग्नि- परीक्षा' देकर अपने आप को निर्दोष सिद्ध करने की परंपरा हमारे समाज में अति प्राचीन रही है। इसी आधार को केन्द्र में रखकर गुप्त जी ने सूर्य की किरणों को तपस्वी की भाँति निष्कलंकित बतलाते हुए कहा है कि -

'चंचल भी किरणों का, / चरित्र क्या ही पवित्र है भोला, /
देकर साख उन्होंने /उठा लिया लाल-लाल वह गोला। /
तपोयोगि, आओ तुम्हीं, सब खेतों के सार, /
कूड़ा-कर्कट हो जहाँ करो जलाकर छार' ।[10]

अग्नि के समान वायु भी मानव को प्राण-दान देती है। वायु के अभाव में मनुष्य का जीवन संभव नहीं। वायु की शुद्धता जीवन के लिए परम आवश्यक है। हम सभी इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि दो मिनट के लिए भी शुद्ध वायु न मिले तो हम सबका जीवन संकट में पड़ जाता है। साकेत की उर्मिला अपने दुःख से वायु को दुःखी करना नहीं चाहती। वह मलयानिल को संबोधित करते हुए कहती है -

'जा मलयानिल, लौट जा, यहाँ अवधि का शाप,
लगे न लू होकर कहीं तू अपने को आप' ![11]

भूमि, जल, अग्नि और वायु इन सबको विश्राम देता है - आकाश जो अनंत और असीम है। आकाश शुद्धता का स्वरूप है, अनंत होते हुए भी सभी को समान अवकाश देता है। वह अपने लिए संचित करके कुछ नहीं रखता। उसकी उदारता ही उसे महान बनाती है। गुप्त जी के राम आकाश तत्व के ही प्रतीक हैं। वह अपने लिए सँजोकर कुछ नहीं रखते बल्कि दूसरों को सर्वस्व देने के लिए ही अवतरित होते हैं। वह तप, त्याग और आदर्श की मूर्ति हैं। साकेत के राम आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में विश्वास न करके परंपरावादी व्यवस्था के समर्थक हैं। दूसरों के दुःखों को दूर करने मैं उन्हें आनंद का अनुभव होता है। प्रकृति के तमाम उपमानों के माध्यम से गुप्त जी के राम अपने जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि -

'मैं आया उनके हेतु कि जो तापित हैं,/ जो विवश, विकल,बल-हीन, दीन शापित हैं।/
हो जायँ अभय वे जिन्हें की भय भासित हैं,/जो कौणप-कुल से मूक-सदृश शासित हैं।
मैं आया, जिसमें बनी रहे मर्यादा, /बच जाय प्रलय से, मिटें न जीवन सादा। /
सुख देने आया, दुःख झेलने आया, / गढ़ने आया हूँ, नहीं तोड़ने आया।'[12]

कृषक का पूरा जीवन मानो प्रकृति के संक्षरण के लिए ही होता है। वह प्रकृति का

शोषण नहीं दोहन करता है। जब सारी दुनिया सो रही होती है वह उस समय कठिन परिश्रम से खेत-खलिहानों को सींच रहा होता है। वह अपने श्रम पर जीवन जीता है फिर भी अपने द्वारा उत्पन्न पैदावार को अपने तक सीमित न रखकर, सबके उपयोग के लिए उसका वितरण करता है। उसका दूसरों के प्रति सेवा-भाव अनुकरणीय है। पर्यावरण को शुद्ध रखने में उसका महान योगदान है। राम का वन-गमन भी एक प्रकार से पर्यावरण को शुद्ध व संतुलित बनाने की ही यात्रा है। 'साकेत' में राम अपने त्याग, सेवा व मैत्री भाव से विकृति को नष्ट कर, सौहार्द्र प्रेम का बिगुल बजाते नजर आते हैं। राम का अपनी प्रजा के साथ संबंध शासक और शासित का नहीं है बल्कि प्रजा तो उनकी प्रकृति है। दोनों एक-दूसरे के ऋणी हैं, सुख-दुःख के सहभागी हैं। गुप्त जी राम के माध्यम से कहते हैं -

'सोचो तुम संबंध हमारा नित्य का, / जब से भव में उदय आदि आदित्य का।/
प्रजा नहीं, तुम प्रकृति हमारी बन गये,/ दोनों के सुख-दुःख एक में सन गये'।'[13]

गुप्त जी की उर्मिला पारंपरिक विरहिणी नायिका नहीं हैं। आधुनिक संदर्भ में देखें तो वह पर्यावरण की संरक्षिका है। वह अपने दुःख से दुःखी होकर पर्यावरण के किसी भी अंश को कोसती नहीं है और न ही ईर्ष्या करती है। वह कोयल, मकड़ी सभी जीव-जंतुओं के प्रति सहानुभूति की भावना रखती है। यहाँ तक कि पीले पत्तों को भी अपने आँचल में भरकर, उनके प्रति अपनी संवेदना को व्यक्त करती हुई कहती है -

'पाऊँ मैं तुम्हें आज, तुम मुझको पाओ, / ले लूँ अंचल पसार, पीतपत्र, आओ। /
फूल और फल-निमित्त, / बलि देकर स्वरस-चित्त, /
लेकर निश्चिंत चित्त, / उड़ न हाय! जाओ, /
लूँ मैं अंचल पसार, पीत-पत्र, आओ'।[14]

सच तो यह है कि कवि ने उर्मिला के माध्यम से एक ऐसे पात्र की रचना की है जिसकी अन्तः प्रकृति पूर्णतः निर्मल और निर्विकार है। उसे अपने चारों ओर प्रकृति प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देती है। खिलते कमल, हँसता चंद्रमा, संसार को दीप्तमान करता सूर्य ये सब उसे सुखद अनुभूति कराते हैं। इसी कारण, उर्मिला की वेदना, सिर्फ उसकी वेदना नहीं रह जाती। वह कह उठती है -

वेदने, तू भी भली बनी! / पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी। /
नई किरण छोड़ी है तूने, तू वह हीर- कनी,
सजग रहूँ मैं, साल हृदय में, ओ प्रिय-विशिख अनी![15]

आज, ऐसा प्रतीत होता है कि स्वार्थ के वशीभूत होकर सभी शक्तियाँ कैकयी के रूप में परिवर्तित हो गयी हैं। इसी कारण, जीवन से सुख- शांति रूपी राम वन चले गए हैं। जब तक कैकयी राम के लिए चित्रकूट जाकर स्वयं पद, प्रतिष्ठा और स्वार्थ से तिलांजलि देकर प्रायश्चित नहीं करेगी तब तक पर्यावरण की सुरक्षा पूर्ण रूपेण असंभव है। पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है - लोभ और काम जैसी वृत्तियों का शमन करें, त्याग व

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

प्रेम जैसे उच्च भावों को जन-जन तक पहुँचाएँ तभी पर्यावरण को शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है। इसके लिए एक उर्मिला नहीं बल्कि हम सबको उर्मिला बनना होगा और उर्मिला के शब्दों को ही दुहराना होगा -

'सींचें ही बस मालिनें, कलश लें, कोई न ले कर्त्तरी,
शाखी फूल फलें यथेच्छ बढ़के, फैलें लताएँ हरी।
क्रीड़ा-कानन शैल यंत्र जल से संसिक्त होता रहे,
मेरे जीवन का, चलो सखि, वहीं सोता भिगोता बहे' ?[16]

भारतीय साहित्य में प्रकृति वर्णन का इतिहास बहुत पुराना है। हिंदी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल में भी प्रेम के आलंबन और उद्दीपन हेतु प्रकृति के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन से उसके महत्व को प्रतिपादित किया गया। आधुनिक काल में ठाकुर जगमोहन सिंह अकेले प्रकृति की उपासना करते हुए द्विवेदी युग के लिए आधार भूमि तैयार करते हैं। परिणामतः मैथिलीशरण गुप्त अपने काव्य में प्राकृतिक उपादानों से पर्यावरणीय बहस को जन्म देते हैं। ग्लोबल वार्मिंग से उपजी जिन समस्याओं को हम वर्तमान में देख रहे हैं, इनकी शुरुआत उन्नीसवीं शताब्दी में ही मशीनों के आग मन से हो चुकी थी। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से प्रकृति का क्षरण, कल-कारखानों और शहरीकरण के विस्तार सेवनों की कटाई और उसके दुष्परिणाम को मैथिलीशरण गुप्त जैसे दूरदर्शी रचनाकार अपनी खुली आँखों से देख रहे थे। अतः वे प्राकृतिक उपादानों के सौंदर्य बखान से मानव जीवन में प्रकृति केमहत्व को समझाने के लिए प्रकृति रक्षा हेतु जागरूकता फैलाने का कार्य साकेत महाकाव्य और पंचवटी जैसे खण्ड काव्य से करते हैं। डॉ. नगेन्द्र द्वारा द्विवेदी युग को दिया गया नाम जागरण सुधारकाल को पर्यावरणीय जागरण के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

संदर्भ :

1. https://archive.org/stream/in.ernet.dli.2015.348445/2015.348445.Aanaya-Mamgan_djvu.txt
2. http://kavitakosh.org
3. https://www.hindi-kavita.com/HindiBharatBhartiGupt.php
4. गुप्त मैथिलीशरण, पंचवटी, साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२७ वि, पृ. 8
5. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 292
6. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (पंचम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ.145
7. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ.299
8. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८

वि, पृ.309-310
9. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (अष्टम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 233
10. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 285-286
11. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 313
12. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (अष्टम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 234
13. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (पंचम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 129
14. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 311
15. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 280
16. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत (नवम सर्ग), साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, २०२८ वि, पृ. 270

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

रामानंद रामरस माते, कहहि कबीर हम कहि कहि थाके...

डॉ. अशोक कुमार मीणा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वामी रामानंद की उपस्थिति जितनी गरिमामयी है, ऐतिहासिक दृष्टि से उतनी ही धुँधली भी। किंवदन्तियों एंव मिथकों ने भक्ति आन्दोलन में उनके योगदान को पूर्णरूप से प्रकट नहीं होने दिया है। उन्होंने भक्ति आंदोलन में उस नींव के पत्थर की भूमिका निभाई है, जिस पर हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ भक्ति साहित्य रूपी प्रासाद निर्मित हुआ है। हिन्दी भाषा की उन्नति तथा रामभक्ति साहित्य का मूल उत्स स्वामी रामानंद एवं उनके द्वारा प्रवर्तित रामानंदी सम्प्रदाय ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। रामानंदी सम्प्रदाय ने मध्यकालीन धर्म साधना के विविध मत-मतांतरों में जनमानस को दिग्भ्रमित होने के बजाय एक समन्वयकारी तथा युगानुकूल भक्ति मार्ग से अवगत कराया। इस सम्प्रदाय ने भारतीय इतिहास में समाज सुधार एवं धर्म सुधार आंदोलन का शंखनाद करते हुए भक्ति जैसी रूढ़िग्रस्त परंपरा को प्रगतिशील चिंतनधारा से संपृक्त किया है। रामानंदी सम्प्रदाय ने देवदर्शन से भी वंचित कर दिये गए शूद्रों एवं स्त्रियों को भी अपने भक्ति मार्ग का सहयात्री बनाया तथा ईश्वर को वर्ग सापेक्ष के बजाय सही अर्थों में समाज सापेक्ष स्थिति प्रदान की।

रामानंदी सम्प्रदाय ने यूरोप के धर्म सुधार आंदोलन से भी पूर्व भारत में धर्म को जाति बन्धनों से मुक्त करने का श्रीगणेश किया तथा बौद्ध मठों की भाँति सभी वर्गों एवं वर्णों के लोगों को अपने यहाँ आश्रय प्रदान किया। यह सम्प्रदाय विश्व बन्धुत्व एवं प्रगतिशील चिंतन की भावभूमि पर निर्मित हुआ है। यही कारण है कि इसमें कर्म और ज्ञान के बजाय अनन्य भक्ति को अधिक महत्व दिया गया है। इस सम्प्रदाय के उदय से धार्मिक संघर्षों पर विराम लग गया या फिर शूद्रों को समाज में उचित स्थान मिल गया, इसका भले ही कोई ठोस प्रमाण न हो, लेकिन इतना तो तय है कि इस सम्प्रदाय से प्रेरणा पाकर ही निर्गुण संत मत का उदय हुआ, जिसने इस सम्प्रदाय की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। रामानंदी सम्प्रदाय द्वारा भक्ति को जाति की कारा से मुक्त करने का परिणाम यह हुआ कि कई प्रतिक्रियावादी तत्वों को प्रवाद फैलाने का अवसर मिल गया। ब्राह्मण आचार्य द्वारा जाति-पाँति के बन्धनों को नकारना, ब्राह्मणवादी कट्टर विचारकों को काफी नागवार गुजरा। यही कारण है कि इन तत्वों द्वारा कभी कबीर को विधवा ब्राह्मणी का पुत्र बताया गया, तो कभी रैदास को पूर्वजन्म का कर्तव्य-भ्रष्ट ब्राह्मण घोषित किया गया। इन प्रवादों से संकेत मिलता है कि स्वामी रामानंद की विचारधारा ने तात्कालिक समाज व्यवस्था में काफी प्रभावशाली क्रांतिकारी भूमिका निभाई थी।

रामानंद से प्रभावित तथा राम के निर्गुण रूप की भक्ति में आस्था रखने वाले कबीर को 'भक्तमाल' तथा 'आनंदभाष्य' में स्वामी रामानंद का शिष्य बताया गया है। हिंदी